बोलियों का संरक्षण व संवर्धन जरूरी : शर्मा

धामी कालेज में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद वक्ता और अन्य ● जागरण

सुन्नी : राजकीय महाविद्यालय धामी में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विचार गोष्ठी व वाद-विवाद प्रतियोगिता प्राचार्य डा. दिनेश सिंह कंवर की अध्यक्षता में हुई। मुख्य वक्ता साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त शिक्षक ओपी शर्मा ने प्रदेश की विभिन्न बोलियों का महत्व बताकर उनके संरक्षण व संवर्धन की आवश्यकता जताई। अनुष्का शर्मा ने नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में दिए गए महत्व का समर्थन करते हुए कहा कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों की समझ, अभिव्यक्ति क्षमता तथा सांस्कृतिक जुड़ाव अधिक सुदृढ़ होता है। प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से अधिगम प्रक्रिया अधिक सहज, प्रभावी व स्थायी बनती है। हिमांशु शर्मा ने कहा कि वर्तमान वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में यदि देश को विश्व स्तर पर सशक्त उपस्थिति दर्ज करनी है तो अंग्रेजी जैसी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक है। प्रो. दिनेश शर्मा ने भी मातृभाषा के सांस्कृतिक व सामाजिक महत्व पर विचार व्यक्त किए। (संसू)

धामी कॉलेज में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर गोष्ठी और वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

हिमाचल दस्तक ▮ सुन्नी

राजकीय महाविद्यालय धामी में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. दिनेश सिंह कंवर की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर साहित्यकार आर सेवानिवृत्त शिक्षक ओपी शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उन्होंने हिमाचल प्रदेश की विभिन्न बोलियों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता पर बल दिया।

▮ कार्यक्रम में छात्रों ने मातृभाषा का महत्व विषय पर विचार व्यक्त किए

उन्होंने कहा कि जो बोली हमें मां से प्राप्त होती है, वह जीवनभर हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बनी रहती है। विद्यार्थियों को देश का भावी भविष्य बताते हुए उन्होंने मातृभाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों ने मातृभाषा का महत्व विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। अनुष्का शर्मा ने नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में दिए गए महत्व का समर्थन करते हुए कहा कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों की समझ, अभिव्यक्ति क्षमता तथा सांस्कृतिक जुड़ाव अधिक सुदृढ़ होता है। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से अधिगम प्रक्रिया अधिक सहज, प्रभावी एवं स्थायी बनती है। वहीं हिमांशु शर्मा ने विषय के विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में यदि देश को विश्व स्तर पर सशक्त उपस्थिति दर्ज करनी है, तो अंग्रेजी जैसी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है। प्रो. दिनेश शर्मा ने भी मातृभाषा के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

धामी कॉलेज में मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित की प्रतियोगिताएं

दैनिक आवाज जनादेश/सुन्नी

राजकीय महाविद्यालय धामी में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. दिनेश सिंह कंवर की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त शिक्षक ओ. पी. शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उन्होंने हिमाचल प्रदेश की विभिन्न बोलियों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जो बोली हमें माँ से प्राप्त होती है, वह जीवनभर हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बनी रहती है। विद्यार्थियों को देश का भावी भविष्य बताते हुए उन्होंने मातृभाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों ने ह्यमातृभाषा का

महत्व विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। अनुष्का शर्मा ने नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में दिए गए महत्व का समर्थन करते हुए कहा कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों की समझ, अभिव्यक्ति क्षमता तथा सांस्कृतिक जुड़ाव अधिक सुदृढ़ होता है। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से अधिगम प्रक्रिया अधिक सहज, प्रभावी एवं स्थायी बनती है। वहीं हिमांशु शर्मा ने विषय के विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में यदि देश को विश्व स्तर पर सशक्त उपस्थिति दर्ज करनी है, तो अंग्रेजी जैसी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है। प्रो. दिनेश शर्मा ने भी मातृभाषा के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ. दिनेश सिंह कंवर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि मातृभाषा हमारी पहचान, संस्कृति और परंपराओं की आधारशिला है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे विचारों और भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति का साधन है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को दिए गए महत्व की सराहना करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों से अपनी मातृभाषा पर गर्व करने तथा उसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। प्राचार्य महोदय ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों एवं आयोजन समिति को सफल आयोजन के लिए बधाई दी। मंच संचालन समीर द्वारा प्रभावी एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया गया। मातृभाषा परिषद की ओर से डॉ. गीता शर्मा ने कार्यक्रम को सफल बनाने तथा अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज करने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।